ISSN : 2583-2948

मोहभंग

डॉ॰ टी महादेव राव
विशाखापत्तनम आंध्र प्रदेश
फोन – 9394290204

सावित्री सोच रही थी वह अब तक क्यों नहीं आया ? पिछले चार दिनों से तो इस समय आया करता था। इतने में ठेकेदार की आवाज़ गूंजी – "खड़े – खड़े क्या कर रही है ? चल गमला उठा और सीमेंट पहुंचा !"

बातों की कटुता को विस्मृत करती वह गमला उठाने लगी कि नजर रास्ते पर चली गई। "अरे वह तो आ रहा है ! पल भर के लिए हृदय की धड़कन तेज हो गई। सीमेंट पहुँचाते पहुंचाते वह सोचने लगी "काश! मेरे किस्मत अच्छी होती! मुंह बोले चाचा चाची के पास इस तरह सुखी और बेरंग जिंदगी तो न बिताती। यह जो इस तरह रोज मुझे देखता है, इरादा क्या है इसका? क्या मुझे सचमुच चाहने तो नहेन लगा ? अपने विचारों से वह शर्मा गई ! बादामी रंग लाल रंग में बदलने लगा चेहरे का।

गंदे हाथों को नल पर धोती हुयी वह कनखियों से उसे देखती रही। वह भी एकटक उसे देखता रहा। कितना अच्छा लग रहा है। काश! मैं इसकी पत्नी होती। एक छोटा सा घर होता। बाल बच्चे होते। इसकी गृहस्थी संभालती, तो शायद यह अभावों से भारी जिंदगी तो न होती सोचते हुये हाथ धो रही थी।

आँचल से हाथ पोंछते हुए वह उसे देखने लगी। यकायक देखता हुआ वह हाथ के इशारे से उसे बुला रहा था। सावित्री थोड़ा संकुचा रही थी कि कहीं कहेगा तो नहीं कि – तुम मुझे पसंद आ गई हो। मैं तुम्हें चाहने लगा हूँ। अचानक वह काल्पनिक लोक से चेतनावस्था में आई और खुद से ही प्रश्न करने लगी कि – "क्या मैं इतनी निर्लज्ज हूँ जो ऐसी बातें सोच रही हूँ। मेरे सपने शायद.....। सोचती हुई वह उसके पास पहुंची। एक बार उसे जी भर के देखने के बाद उसने नई नवेली वधू की तरह जमीन पर नज़र टीका ली।

"सुनो!"

नजर उठाकर सावित्री ने देखा शरारती मुस्कुराहट के साथ उसने अपनी एक आँख दबाते हुए सावित्री से कहा "क्यों री ! कितना पैसा लेती है तू एक रात का? बता!"

सावित्री की आँखें उस व्यक्ति को निहारते हुये सजल हो उठी जिसने एक ही वाक्य में कोमल और मधुर भावनाओं से बने महल को तहस-नहस कर दिया था।